प्रकृति का स्वभाव और पारिस्थितिक स्थिरता का आधाार है जैव विविधाता

fot;iky c?ky
अध्यक्ष, पर्यावरण सचेतक समिति,
अरण्या, एच–206, गोविन्दपुरम, गाजियाबाद
Email : paryawaran_sachetak@yahoo.com

भू मण्डल पर विविध जीवों व वनस्पतियों के उद्–विकास तथा विलुप्त होने की प्राकृतिक प्रक्रिया का क्रम आदिकाल से जारी है। जीव जगत के अनुवांशिक, जाति, समुदाय के रूप में अल्फा, बीटा, गामा जैव विविधता द्वारा प्रकृति के स्वभाव और पारिस्थितिक स्थिरता का आधार निर्मित होता है। वर्ष 1980 में नार्स एवं मैक मेनस ने जैव विविधता शब्द का प्रयोग पहली बार किया। वर्तमान के भौतिक काल में पारिस्थितिक तन्त्र की विविधता, रहन सहन के विभिन्न स्वरूप , जीवन जीने के विविध तरीकों के अस्तित्व पर संकट खड़ा हो रहा है। प्राकृतिक आवासों के नष्ट होने के कारण जैव विविधता में हो रहे ह्यस आज विश्व की सबसे बड़ी पर्यावरणीय समस्या है। जैव विविधता की दृष्टि से भारत एक समृद्ध देश था जो विश्व में पायी जाने वाली कुल 15 लाख जैव विविधाताओं में से 6 लाख जैव विविधाताओं से परिपूर्ण होकर यहाँ के प्राकृतिक स्वभाव और पारिस्थितिक स्थिरता को कायम रखने में सक्षम रह सका लेकिन बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध दोहन ने पूरी पर्यावरणीय संरचना को ध्वस्त कर दिया है।

सर्वांगीण विकास और गरीबी उन्मूलन के लिये जैव विविधता का विशेष योगदान है। कृषि प्रधान देश की 70 फीसदी आबादी गावों में बसती है जो सामान्यता नदी, झील, पहाड़, तालाब व अन्य प्राकृतिक धरोहर के निकट स्थित होते है और वहाँ की पर्यावरणीय संरचना उनकी आजीविका के साधन सृजित कर विकास में सहायक होते हैं। गंगा बेसन के इर्द गिर्द रहने वाली आबादी का जीवनयापन वहाँ की जैव विविधता पर आश्रित है। हिमालय पर मिलने वाली संजीवनी के रूप में 18000 आयुर्वेदिक, 11000 सिद्धा, 2500 यूनानी, 3000 तिब्बती तथा 4700 लोक परम्पराओं में प्रचलित औषधीय पौधो की विविधता द्वारा लगभग 5 लाख ऐसे नुस्खे है जो असाध्य बीमारियों का इलाज करते है। ये वनस्पतियां विलुप्त होने के कगार पर हैं जो हमारे यहां प्रति घण्टे की दर से 5 प्रजातियां विलुप्त हो रही है। आई0सी0यू0एन0 की खतरनाक सूची में संकटग्रस्त जातियों की निरन्तर बढ़ोत्तरी हो रही है। पादप जातियों में आबृतबीजी–17500, अनाबृतबीजी–65, टेरीडोफाइटा–1100, बायोफाइटा–2850, लाइकेन–2000, कवक–15000, जीवाणु–1150, तथा शैवाल–7200 के साथ प्राणी जाति में पक्षी–1235, सरीसर्प–462, स्तनधारी–412, उभयचर–29, संधिपाद–68779, अकशेरूकी–7987, मत्स्य–2718, प्रोटोकोडेटो–129, प्रोटोजोआ–2655, आदि प्रचुर मात्रा में पायी जाती हैं। इससे जड़ी बूटी संग्रहण, मछली पालन, जैविक कृषि, मौन पालन, फूल उत्पादन, पर्यटन, पशुपालन आदि क्षेत्रों में स्वरोजगार के साधनों की अपार सम्भावना है, जिनको प्रोत्साहित कर चहुँमुखी विकास और गरीबी उन्मूलन के क्षेत्र में सार्थक पहल सम्भव है।

भारत में कुल 13 जैव मण्डल निंचय बनाये गये है

जिनमें से उत्तर प्रदेश में एक भी नहीं है। जबकि यहां जैव विविधता प्रचुर मात्रा में है, जिसका संरक्षण करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रदेश में वनावरण मात्र 4.46 प्रतिशत होकर देश में 27 वे स्थान पर आता है। वन्य जीव संरक्षण के लिये मात्र एक नेशनल पार्क होना यहां की संरक्षित वन भूमि की दुर्दशा और पर्यावरण सुरक्षा के प्रति संजीदगी पर प्रश्नचिन्ह लगाता है। पादप और प्रजातियों के संरक्षण और संवर्द्धन के लिये स्थानीय स्तर पर, स्थानीय भाषा में, स्थानीय लोगो द्वारा रचनात्मक प्रयास किये जायें, तभी जैव विविधता को बचाकर पर्यावरण को सन्तुलित करके चहुमुखी विकास की कल्पना की जा सकती है।

शिक्षा, सूचना तथा संचार तकनीकी माध्यम में जैव विविधता के क्षरण से होने वाले पर्यावरणीय नुकसानों की जानकारी आम जन तक पहुँचायी जायें, इसकी सुनिश्चिता के लियें व्यवहारिक कार्ययोजना का संचालन हो, जिसमे प्रभावित जनसमुदाय, स्वयं सेवी संगठन तथा प्रशासनिक तंत्र अपनी सामूहिक जिम्मेदारी समझकर अग्रणी भूमिका निभायें। जैव विविधता संरक्षण को केन्द्र बिन्दु बनाकर विकासकारी योजनायें बनायी जायें जिनमें जनता की सहभागिता सुनिश्चित हो। रोजगारपरक योजना में जैव विविधता से जुड़े सभी पहलूओं पर शिक्षा, प्रशिक्षण तथा शोध कार्य हो और अधिक से अधिक जैव मण्डल निंचय बनाये जाये ताकि विश्वव्यापी पर्यावरणीय समस्या जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिग को रोकने का स्थायी निदान हो सके और जैव विविधता संरक्षण के लिये जन क्रांति लायी जा सके ।

* * * *